International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2021; 3(1): 25-28
Received: 17-11-2020
Accepted: 19-12-2020

डॉ0 हाजरा मसूद
असि0 प्रो0–समाजशास्त्र विभाग
करामत हुसैन महिला पी0जी0कालेज
लखनउ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 हाजरा मसूद
असि0 प्रो0–समाजशास्त्र विभाग
करामत हुसैन महिला पी0जी0कालेज
लखनउ, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत की परंपरागत परिवार व्यवस्था में संरचनात्मक तथा कार्यात्मक परिवर्तनः

डॉ0 हाजरा मसूद

सार
भारत की संयुक्त परिवार व्यवस्था कई कारणों से बाधित हुई है। भारत की प्राचीन परंपरागत परिवार व्यवस्था में संरचनात्मक तथा कार्यात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। अंग्रेज़ों के आगमन से उनके साथ लाए गए नए आर्थिक संगठनों, विचारधाराओं तथा प्रशासनिक प्रणालियों के कारण सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक था। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय तथा उदारवाद के प्रसार ने संयुक्त परिवार की भावनाओं के समक्ष चुनौती उत्पन्न प्रस्तुत कर दिया । परिणामतः भारत में एकल परिवार का प्रचलन संयुक्त परिवार से अधिक प्रारम्भहो गया है जिसके विविध कारण हैं तथापि व्यक्तिपरक चरित्र में वृद्धि एकल परिवार की बढ़ती प्रवृत्ति का परिणाम है।

कुटशब्दः पारिवारिक ढांचे में संरचनात्मक तथा कार्यात्मक परिवर्तन।

प्रस्तावना
परिवार स्थायी एवं सार्वभौमिक संस्था है, परन्तु प्रत्येक स्थान पर इसके स्वरूप में भिन्नता पायी जाती है। पश्चिमी देशों में मूल परिवार या दाम्पत्य परिवार की प्रधानता थी तो भारतीय गांव में संयुक्त परिवार या विस्तृत परिवार की। परिवार के अभाव में हम समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं। अगस्त काम्टे ने परिवार को समाज की आधारभूत इकाई कहा है। समाजशास्त्री परिवार को संस्था और समूह दोनों मानते हैं। परिवार मनुष्य के जीवन का बुनियादी पहलू है। भारत में तो परिवार का और भी महत्व है क्योंकि आदिकाल से ही यह बुजुर्गों का मुख्य आश्रय रहा है जो उनकी भावनात्मक शारीरिक व आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में बुजुर्गों को अपेक्षानुरूप सुरक्षा, सम्मान, आत्मीयता व मानसिक संतुष्टि प्राप्त थी। संयुक्त पूंजी, संयुक्त निवास तथा संयुक्त उत्तरदायित्व के कारण आर्थिक सुरक्षा होने तथा परिवार की सत्ता बुजुर्ग व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित होने के कारण परिवार में उनका प्रभुत्व था परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्रवजन, आधुनिकीकरण, नवीन आर्थिक व्यवस्था तथा सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि ने परिवार की परम्परागत, संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक प्रकृति को विखंडित कर दिया है तथा उनके स्थान पर एकाकी परिवारों का प्रचलन बढ़ा है जो युवा पीढ़ी के लिए उपयुक्त व सुविधाजनक सिद्ध हो रहा है। संयुक्त परिवार के टूटने का महत्वपूर्ण कारण नित्य बढता उपभोक्तवाद है।जिसने व्यक्ति को अधिक महत्वाकांक्षी बना दिया है। अधिक सुविधाएँ पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनशक्ति समाप्त होती जा रही है और स्वार्थपरता बढ़ती जा रही है। एकल परिवार में रहते हुए मानव भावनात्मक रूप से विकलांग होता जा रहा है। जो संयुक्त परिवार शेष हैं भी वे परम्परागत आदर्शों में बहुत दूर हट चुके हैं। पीढ़ी अंतराल पश्चिमी रंग ढ़ ढंग और नवीन सोच के कारण पुरानी व नई पीढ़ी में टकराव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। यह सब पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की दे है।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय तथा उदारवाद के प्रसार ने संयुक्त परिवार की भावनाओं के समक्ष चुनौती पेश की। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में संचार के तीव्र साधनों के चलते देश के दूरस्थ हिस्से भी एक–दूसरे के निकट आए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर रहने के बजाय अधिक बाज़ारोन्मुख होती जा रही थी तथा नगरों का उदय हो रहा था। पाश्चात्य शिक्षा नौकरशाही संगठन का परिपालन करती थी। इन परिवर्तनों ने परंपरागत संयुक्त व्यवस्था को प्रभावित किया। आर्थिक स्वावलंबन और आत्म–निर्भरता कुछ ऐसे कारण हैं जिनके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार की संख्या में लगातार कमी आने लगी है, पहले जहां पारिवारिक सदस्य अपनी हर छोटी–मोटी जरूरतों के लिए एक–दूसरे पर निर्भर करते थे, वहीं अब लोग पूर्ण रूप से खुद पर ही आश्रित होने लगे हैं, साथ ही बढ़ती महंगाई और सहनशीलता की कमी भी इस विघटन के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसी परिस्थितियों के फलस्वरूप जो बच्चा वर्ष 2000 में एकल परिवार में पैदा हुआ होगा जिसकी उम्र आज की तारीख में 18 साल है, अगर हम उस बच्चे से बात करे तो पता चलता है वह 18 वर्षीय युवा बहुत ज्यादा अकेला एवं कुंठित है, तुलना में उस युवा के जिसका जन्म वर्ष 1981 में एक

संयुक्त परिवार में हुआ था, जिसकी परवरिश संयुक्त परिवार में हुई थी, आज की तारीख में जिसकी उम्र 36 वर्ष है। लोगों की संकीर्ण होती मानसिकता ऐसे छोटे–छोटे और सीमित परिवारों के उद्‌भव में काफी सहायक होती हैं, सामुदायिक हितों की बात ही छोड़िए, अपने माता–पिता की जिम्मेदारी भी बच्चों को बोझ लगने लगी है। एकल परिवार से तात्पर्य केवल पति–पत्नी और उनके बच्चे से हैं, एकल परिवारों के प्रति बढ़ती दिलचस्पी के पीछे सबसे बड़ा कारण है पति–पत्नी दोनों अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र रहना चाहते हैं, खुद से संबंधित किसी भी मसले में दूसरे व्यक्ति का हस्तक्षेप सहन पसन्द नहीं करते, उनके इस अति महत्वाकांक्षी निर्णय का सबसे बड़ा नुकसान यही है कि वे परिवार की अखंडता और एकता पर बहुत गहरा प्रहार कर रहे हैं। माता–पिता बड़े शौक से यह सोचकर अपने बच्चों का पालन पोषण और उनकी अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करते हैं कि वृद्धावस्था में उनके बच्चे उन्हें सहारा देंगे, लेकिन अब हो इसका एकदम उलटा रहा है, बच्चे काबिल बनने के बाद अपने अभिभावकों के बलिदान और प्रेम की परवाह किए बगैर उनसे अलग अपनी एक नई दुनियां बसा ले रहे हैं, जिसमें माता–पिता के प्रति भावनाओं और उत्तरदायित्वों के लिए कोई स्थान नहीं होता। पहले जो तीज–त्यौहार पूरा परिवार एक साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया करता था, आज वह त्यौहार अलग–थलग रहकर अनमने ढंग से मनाया जाने लगा है। पहले जहां पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति उत्सवों में चार–चांद लगाया करती थी, वह उत्सव मात्र एक औपचारिकता बन कर रह गए हैं। आज की भागती–दौड़ती जीवनशैली को देखा जाए तो एकल परिवारों के केवल नुकसान ही नजर आते हैं। बच्चों के चरित्र, व्यक्तित्व, निर्माण के दृष्टिकोण से, परिवारों के टूटने से बच्चों में आक्रामक रुख अख्तियार करने, तनाव से भरी जीवन शैली, बाल अपराध, बच्चों के बीच दिन–ब–दिन बढ़ती असुरक्षा की भावना, बच्चों के साथ हो रही हिंसक घटनायें, शुभ संकेत नहीं है राष्ट्र के लिए एवं राष्ट्र के भविष्य हमारे बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए।

संयुक्त परिवार के विघटन तथा एकल परिवार की बढ़ती प्रवृत्ति के प्रमुख कारणः

- औद्योगीकरणः भारत में अंग्रेज़ों के आगमन के फलस्वरूप औद्योगीकरण की शुरुआत हुई तथा स्वतंत्रता के बाद इसमें तेज़ी आई, जिसके कारण ग्रामीण जनसंख्या का पलायन रोज़गार तथा बेहतर जीवन स्तर के लिये शहरी क्षेत्रों की ओर हुआ। उद्योगों में रोज़गार के कारण युवाओं की अपने परिवार के ऊपर निर्भरता घटी तथा वे अपने परिवार के मुखिया के नियंत्रण से मुक्त हुए।
- नगरीकरणः विगत कुछ दशकों में नगरीय जनसंख्या में तेज़ी से वृद्धि हुई है, जिसकी परिणति एकल परिवार की स्थापना के रूप में हुई है, क्योंकि शहर के निवासियों ने एकल परिवार को चुना है। नगरीकरण ने वैयक्तिकता तथा निजता के ऊपर बल दिया है। ऐसे शिक्षित व्यक्ति जो अच्छे रोज़गार प्राप्त करने में सफल रहते हैं, उनमें देखा गया है कि वे अधिक स्वतंत्रता पसंद करते हैं तथा रिश्तेदारों से सीमित संबंध रखना चाहते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने व्यावसायिक, शैक्षणिक, धार्मिक, मनोरंजन तथा राजनीतिक जीवन जैसे विभिन्न हितों को पूरा करता है।
- शिक्षाः शिक्षा ने लोगों की अभिवृत्ति, धारणाओं तथा विचारधाराओं आदि को प्रभावित किया है। यह व्यक्तिवाद को बल देती है तथा लोगों को ऐसे रोज़गार के लिये तैयार करती है जो उन्हें अपने पैतृक स्थान पर नहीं मिल सकता है। परिणामस्वरूप लोग अपने पूर्वजों से अलग हो जाते हैं तथा नए रहन–सहन को आत्मसात कर लेते हैं।
- महिलाओं का सशक्तीकरणः शिक्षित भारतीय महिलाएँ आधुनिक पारिवारिक जीवन से प्रभावित हैं, अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं तथा पुरुषों के साथ बराबरी का दर्ज़ा चाहती हैं, वे अपना खर्च स्वयं उठा सकती हैं, जो कि उनमें स्वतंत्रता की भावना का संचार करता है और अंततः व्यक्तिवाद के रूप में परिणत होता है।
- पाश्चात्य संस्कृति का प्रभावः यह स्वतंत्रता तथा समानता की शिक्षा देती है जो कि व्यक्तिवाद को बढ़ावा देती है, साथ ही यह भौतिकवाद को भी बढ़ावा देती है।
- विवाह–व्यवस्था में परिवर्तनः विवाह की आयु में परिवर्तन, जीवनसाथी चुनने की आज़ादी तथा विवाह के प्रति अभिवृत्ति में परिवर्तन ने संयुक्त परिवार को प्रभावित किया है तथा परिवार के ऊपर पितृसत्तात्मक पकड़ ढीली हुई है।
- सामाजिक दायित्वः हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1929य हिंदू महिला संपत्ति का अधिकार अधिनियम, 1937य विशेष विवाह अधिनियम, 1954य हिंदू विवाह अधिनियम, 1955य दहेज प्रतिषेध अधिनियम, 1961 इत्यादि अधिनियमों ने पारस्परिक संबंधों, परिवार के संयोजन तथा संयुक्त परिवार की स्थिरता को प्रभावित किया है।
- जनाधिक्यः बढ़ती जनसंख्या ने कृषि तथा आवासीय भूमि के ऊपर अत्यधिक दबाव का निर्माण किया है। निर्धन तथा बेरोज़गार लोग जब दूरस्थ स्थानों पर रोज़गार पाते हैं तो स्वतः ही वे पृथक परिवार बनाते हैं तथा धीरे–धीरे उनका संयुक्त परिवार कमज़ोर हो जाता है।
- आवास की समस्याः शहरों में यह विकट समस्या है, जो लोगों को एकल परिवार के निर्माण की ओर प्रेरित करती है।
- कृषि तथा ग्रामोद्योग का पतनः संयुक्त परिवार का उदय कृषि समाज के उत्पाद के रूप में हुआ था तथा इसके विघटन की ज़िम्मेदारी औद्योगीकरण तथा नगरीकरण को दी जा सकती है।
- संचार तथा परिवहन का प्रसार

पारिवारिक झगड़े :– पारिवारिक झगड़ों के कारण संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है। संपत्ति, पारिवारिक आय तथा व्यय, कार्यों का असमान वितरण इत्यादि झगड़े की वज़ह है।

संयुक्त परिवार और एकल परिवार में क्या अंतर :– संयुक्त परिवार में व्यक्ति की जीवनशैली और एकल परिवार की जीवनशैली किस प्रकार की होती है? संयुक्त परिवार में रहना लाभदायक है या एकल परिवार में? आज के समय में अधिकांश परिवार ऐसे हैं जो एकल परिवार है, संयुक्त परिवार आज के समय में बहुत कम ही देखने को मिलते हैं। आज की पीढ़ी संयुक्त परिवार में रहना पसंद नहीं करती क्योंकि वह अपने हिसाब से जीवन जीना चाहती है। परन्तु क्या संयुक्त परिवार में रहने के कोई फायदे नहीं है? संयुक्त परिवार और एकल परिवार में अंतर की बात करे तो संयुक्त परिवार में व्यक्ति रिश्ते निभाना सिखता है, संस्कार सिखता है, परन्तु एकल परिवार अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहता है, आज अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं जो अपने परिवार से अलग रहते हैं या उनसे रिश्ते नहीं निभाते हैं क्यों? क्योंकि अधिकांश लोगों की सोच आज यहीं है कि वह आजादी से रहे किसी तरह की पाबंदी और जिम्मेदारी उठाना वह नहीं चाहते। कई व्यक्ति ऐसे भी जिनका परिवार छोटा होता है वह अक्सर बड़े परिवार की चाह रखते हैं क्योंकि संयुक्त परिवार की रोनक अलग होती है। पुराने समय में अधिकांश परिवार संयुक्त ही होते थे परिवार में हर व्यक्ति चाहे वह महिला हो या पुरुष वह मिलकर काम करते थे, मिलकर जिम्मेदारियां उठाते थे, और सभी एकजुट होकर रहते थे पहले लोग रिश्तो का महत्व समझते थे। आज के समय में भी अधिकांश ऐसे परिवार है जहां सभी लोग

एक–साथ मिलकर रहते हैं सभी अपनी जिम्मेदारीयां समझते हैं। एकल परिवार में व्यक्ति रिश्तों की अहमियत नहीं समझ पाता है व्यक्ति अपने बच्चों को वह संस्कार नहीं दे पाता है जो संयुक्त परिवार में मिलते हैं, संयुक्त परिवार में बच्चें सभी से कुछ ना कुछ सीखते हैं, दादा–दादी की सीख लेते हैं। संयुक्त परिवार में सभी त्योहार मिलजुल बनाते हैं और बड़े परिवार में हर त्योहार की रौनक अलग होती है। संयुक्त परिवार में सभी सुख और दुःख की घड़ी में साथ निभाते हैं अपने परिवार पर आयी हर मुसीबत का मिलकर सामना करते हैं।

संयुक्त परिवार में एकता :– संयुक्त परिवार में हर व्यक्ति एकता बनाकर रहता है, और एक संयुक्त परिवार और संस्कारी परिवार बुजुर्गों के मार्गदर्शन से ही बनता है। और बड़े परिवार में हर व्यक्ति बुजुर्गों से अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है। संयुक्त परिवार की डोर तब मजबूत होती है जब परिवार का बड़ा सदस्य मजबूत होता है अर्थात परिवार एक जिम्मेदार व्यक्ति से ही चलता है और संयुक्त परिवार में जिम्मेदारियों का बोझ बड़े भाई पर ही होता है अतः उस व्यक्ति को हर प्रकार से पता होना चाहिए कि परिवार किस प्रकार चलता है और अक्सर ऐसा होता है कि उस व्यक्ति को परिवार माला को टूटने से बचाने के लिए अनेक प्रकार के कष्टों से गुजरना पड़ता है। संयुक्त परिवार में मतभेद जरूर होते हैं परंतु परिवार में किसी भी व्यक्ति पर मुसीबत आने पर हर व्यक्ति उसके साथ खड़ा होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जितना जरूरी संयुक्त परिवार का होना है उसी प्रकार परिवार के हर व्यक्ति को यह जानना जरूरी है कि परिवार चलता कैसे हैं परिवार में हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों का अहसास होना चाहिए ताकि किसी एक व्यक्ति पर जिम्मेदारियों का बोझ न हो। संयुक्त परिवार के बच्चों की बात करें तो बच्चे अनेक प्रकार की चीजें परिवार में सीखते हैं वहां बच्चे मिल बांटकर साथ मे खाना सीखते हैं साथ मे पढ़ते हैं साथ मे खेल खेलते हैं इस प्रकार बच्चे एकता सीखते हैं।

संयुक्त परिवार में संस्कार :– संयुक्त परिवार में संस्कारों की अलग ही छवि होती है, बड़े परिवार में बच्चे जल्दी ही संस्कार सीखते हैं सबसे महत्वपूर्ण यह है कि संयुक्त परिवार में छोटी सी चीज का माहौल भी उत्साह के रूप में होता है। जब किसी व्यक्ति का संयुक्त परिवार होता है और उस परिवार की डोर मजबूत हो तो बाहर की कोई भी ताकत उस डोर को कमजोर नहीं कर सकती। संयुक्त परिवार में बच्चों को संस्कार अच्छे से मिलते हैं क्योंकि वह संस्कार बुजुर्गों के दिये होते हैं यदि परिवार में बड़े मिलजुल रहे और प्रेम से रहते हैं तो इसका प्रभाव बच्चों पर जरूर पड़ता है। संयुक्त परिवार को होना ही महत्वपूर्ण नहीं है उस परिवार में प्रेम होना सबसे ज्यादा जरूरी है। आज के समय में अधिकांश परिवार बंटवारा चाहते हैं किन्तु व्यक्ति यह नहीं समझ पाता असली सुख परिवार से ही होता है जब तक व्यक्ति परिवार से बंधा होता है वह मजबूत रहता है क्योंकि उसे पता होता है हर सुख दुख में परिवार का व्यक्ति सर्वप्रथम साथ देता है।

एकल परिवार में संस्कार :– एकल परिवार में बच्चों को संस्कार अवश्य मिलते हैं पर संयुक्त परिवार की तरह नहीं उन्हें प्यार तो जरूर मिलता है पर संयुक्त परिवार की तरह नहीं क्योंकि एकल परिवार में बच्चों को सिर्फ माता–पिता से शिक्षा मिलती है एकल परिवार में उसे चाचा दृ चाची, दादा–दादी का प्यार और संस्कार प्राप्त नहीं होते। आज के समय में अधिकांश लोग अपने माता–पिता के साथ भी नहीं रहते उस स्थिति में बच्चे परिवार का महत्व नहीं समझ पाते, वह चीजों को मिल बांटकर खाना नहीं जानते, वह भाई–बहनों से परिवार का महत्व नहीं जानते। एकल परिवार में व्यक्ति को सभी प्रकार का सुख प्राप्त होता है परन्तु सभी मोह–माया के सुखों से ऊपर परिवार होता है उसके महत्व को नहीं जानते। पर व्यक्ति को यह सुख समझना जरूरी है सांसारिक सुख आता और जाता रहता है और सिर्फ परिवार ही होता है जो हर परिस्थिति में साथ होता है।

एकल परिवार में पल रहे बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावः

एकल परिवार में माता पिता अपने बच्चों के साथ में रहते हैं और बच्चे अपने हर छोटे–बड़े कामों के लिए केवल अपने माता–पिता पर ही निर्भर रहते हैं और माता–पिता भी अपने बच्चों की पल–पल की जानकारी रखते हैं।

सकारात्मक प्रभाव :–

1. निरंतर अच्छी या एक सी देखभालः– ऐसे में माता– पिता बच्चों को अच्छा खाना– पीना, पढ़ना– लिखना, घूमना फिरना देकर हर प्रकार से संतुष्टि देने का भरपूर प्रयास करते हैं ।जिसके फलस्वरूप माता–पिता और बच्चों के बीच एक अच्छी समझ बन जाती है।

2. सकारात्मक व्यवहार में वृद्धिः– एकल परिवार में रहने वाले बच्चे बचपन से ही एक–दूसरे के साथ बंधे रहने के आदी होते हैं, तो ऐसे में उनके अंदर विरोध कम और सहयोग के भाव अधिक होते हैं, और यही सहयोग भाव उन्हें अधिक सकारात्मक (चवेपजपअम) बनाता है और यह उनका व्यवहार सा बन जाता है।

3. शिक्षा पर अधिक ध्यानः– माता–पिता और बच्चों की छोटी सी अपनी ही दुनियां होती है, तो माता–पिता अपना अधिक समय बच्चे की पढ़ाई –लिखाई और उसके उज्जवल भविष्य की तैयारियों को कराने में लगाते हैं ।

4. आर्थिक स्थिरताः– परिवार छोटा होता है और जरूरतें सीमित और योजनाबद्ध, तो आर्थिक समृद्धि की संभावनाएं अधिक बढ़ जाती हैं। जिसके चलते परिवार एक विलासितापूर्ण जीवन को जीने का अभ्यस्त हो जाता है । जिसके चलते बच्चों में उच्च वर्गीय समाज में जीवन को जीने की और एक अच्छे जीवन स्तर की आदत हो जाती है।

5. अतिरिक्त गतिविधियों का अच्छा विकासः– एकल परिवार में माता–पिता पढ़ाई के साथ –साथ कई और चीजें जैसे वाद्य यंत्र बजाना, गाना– नाचना, तैरना, वैदिक गणित आदि के लिए अपने बच्चे को पूरी सुविधाओं के साथ भेजना पसंद करते हैं । जिससे उनका सर्वांगीण विकास होकर वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हो जाते हैं।

6. उच्च स्थान मान :– ऐसे परिवारों के बच्चे जिनका पालन पोषण आर्थिक स्थिरता में, सकारात्मक व्यवहार के साथ, अच्छे वातावरण वाले विद्यालय में, अच्छे अंको और अन्य अतिरिक्त गतिविधियों के चलते होता है, तो ऐसे बच्चों का प्लेसमेंट बहुत ही अच्छा होता है। जिससे उनका भविष्य सुनहरा रहता है।

7. एकल परिवारों का सामाजिक भौतिक और संवेदनात्मक परिवेश बहुत प्रभावशाली व आकर्षक होता है और स्वास्थ्य की दृ ष्टि से भी यह एक अच्छा वातावरण प्रदान कर पाते हैं।

8. एकल परिवार में रहने वाले बच्चे जल्दी ही आत्मनिर्भर हो जाते हैं। जिससे उनमें बहुत अच्छी संवाद (बवउउनदपबंजपवद) क्षमता का विकास हो जाता है ।

9. ऐसे बच्चे सक्षम और स्वतंत्र जीवन शैली के आदी हो जाते हैं। जिससे ऐसे परिवारों में अधिक मानसिक तनाव वह लड़ाई –झगड़े नहीं होते हैं।

नकारात्मक प्रभाव :–

1. वास्तविकता समाप्त हो जाती हैः– एकल परिवार के बढ़ते दायरे में जीवन की वास्तविक जीवन शैली और परिवार प्रथा कहीं खो गई है। आजकल दादा –दादी, चाचा– चाची, बुआ, मौसी, मामा केवल एक व्यक्ति हैं। जिनके घर कभी– कभी मिलने जाया जाता है ।यह सभी एक ही परिवार के हैं, यह एकल परिवार में रह रहे बच्चों की सोच से परे है और वे परिवार की असलियत से दूर अपने में ही परिवार बन कर रह जा रहे हैं।

2. छोटी सहयोग प्रणाली :–कठिन समय में एकल परिवारों को अत्यधिक कष्ट सहना पड़ता है क्योंकि बच्चे सब के साथ अपने को समायोजित नहीं कर पाते हैं।

3. स्व केंद्रित विश्व परिदृश्य :– एकल परिवार में रहने वाले सभी लोग सिर्फ अपने तक ही सीमित रहते हैं और अपने अन्य सगे संबंधियों से मतलब नहीं रखते, जो उन्हें उनके अपनों से दूर करता जाता है अर्थात् वह स्वयं में ही केंद्रित होकर रह जाते हैं और अपने संबंधों और विचारों को अत्यधिक विस्तार नहीं दे पाते।

4. परंपराओं और संस्कारों का अभाव :– आज के एकल परिवारों में पल रहे बच्चे अपनी संस्कृति, परंपराओं, संस्कारों और सभ्यताओं से बहुत दूर होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते दिखाई पड़ते हैं।

निष्कर्ष :–

एकल परिवार प्रथा में जहां एक ओर सकारात्मकता का विकास होता है, अच्छी आय के साधन बनते हैं, बच्चों के अंदर अनेकों गतिविधियों का विकास और विस्तार होता है, अच्छी पढ़ाई करके अच्छी–अच्छी नौकरियां प्राप्त करने में सफल होते हैं, साथ में खाना– पीना, घूमना, बातचीत करना उनके आपसी संबंधों को मज़बूत करता है।

वहीं यदि एकल परिवार में पल रहे बच्चों को रिश्ते और उनकी अहमियत की भी शिक्षा वास्तविक रिश्ते निभा कर दी जाए, तो शायद एकल परिवार की शिक्षा और प्रथा अपनी पूर्णता को प्राप्त होगी नहीं तो कहीं एक कोना शायद अछूता रह जाए।

सन्दर्भः

1. हरी कृष्ण रावत,–समाजशास्त्र विश्वकोष,रावत पबिलकेशन जयपुर।
2. ंगा महेश मिश्र–ग्रामीण समाजशास्त्र तथा सामुदायिक विकास।
3. पी 0एन0खरे– ग्रामीण समाज शास्त्र, गया प्रसाद एन्ड सन्स आगरा।
4. रवीनाथ मुकर्जी, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, सरस्वती सदन, दिल्ली, 1975,
5. ए. आर. देसाई, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, रावत पिब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009
6. पी.एम. एल. गुप्त, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, साहित्य भवन पिब्लिकेशन्स, आगरा, 2006
7. श्रामबिहारी सिंह तोमर– समाज शास्त्र की रुपरेखा।
8. मंजू कुमारी–भारत में बाल अपराध रावत पिब्लिकेशन्स, जयपुर, 2009
9. Arnold Green W. Sociology; An Analysis of life in Modern Society, Mac Graw Hill Book. Co. New York.
10. Sociology is thus the synthesizing and generalizing science of man in all of his social relationship.